MATA KARMA

Mata Karma was an ardent devotee of Lord Krishna whose life is a symbol of devotion, courage, and social service. Her life inspires us to fight against various social evils like untouchability and conservatism while promoting unity and harmony in society.

Mata Karma was born on April 12, 1016, in Jhansi, Uttar Pradesh to Ramshah and Leelavati who were deeply religious and philanthropic. They had unwavering faith in Lord Krishna and spent their days immersed in devotion and service. Since childhood, Karma was drawn towards devotion to Lord Krishna and offered her prayers with immense reverence.

Mata Karma was married to Chaturbhuj Shah. After his death, she resolved to look after her son. After some time, she arranged the marriage of her elder son and, entrusting her family and business responsibilities to him, embarked on a journey to seek the blessings of Lord Krishna.

During her journey, Mata Karma visited Nagari and Sihava in Chhattisgarh, where she took blessings of saints and proceeded on her journey to Jagannath Puri, passing through Rajim.

In Rajim, she met a member of the Sarathi community. The people of this community held her in great reverence and invited her to their home. Mata Karma sat on a platform in their village and preached the message of devotion. Afterward, she took a boat to travel towards Puri.

It is said that upon reaching Puri, the temple servants asked her to cook khichdi (a traditional dish), and Lord Krishna accepted the khichdi. This event established the tradition of offering khichdi to Lord Krishna.

Mata Karma spent four years of her life in devotion to lord Jagannath. Eventually on March 27, 1064 (Vikram Samvat 1121), Mata Karma had a vision of Lord Krishna and left her mortal body, merging into the heart of God.

Mata Karma's life is an exceptional example of devotion, courage, and social service. She devoted herself entirely to Lord Krishna while also striving to bring about social reforms. Mata Karma was a remarkable example of feminine power, demonstrating through her life that women can guide society in the right direction.

Through her efforts to fight against social evils, Mata Karma promoted unity, kindness, and compassion. She showed that by embracing the divine with an open heart, one can not only transform their own life but can also influence society positively. Her legacy as a saintly figure, a social reformer, and a devoted follower of Lord Krishna remains strong and revered even today.

The Department of Posts is pleased to issue commemorative postage stamp on Mata Karma.

Credits:

Stamp/FDC/Brochure/ Cancellation Cachet	:	Ms. Himani
Text	:	Referenced from content provided by Proponent

भारतीय डाक
India Post
Dak Sewa-Jan Sewa

डाक विभाग
DEPARTMENT OF POSTS

विवरणिका
BROCHURE

माता कर्मा MATA KARMA

माता कर्मा

माता कर्मा भगवान कृष्ण की परम भक्त थीं। उनका जीवन भक्ति, साहस और समाज सेवा का प्रतीक है। माता कर्मा का जीवन समाज में एकता और सद्भाव को बढ़ावा देते हुए अस्पृश्यता और रूढ़िवाद जैसी सामाजिक बुराइयों के खिलाफ लड़ने की प्रेरणा देता है।

माता कर्मा का जन्म 12 अप्रैल, 1016 को झांसी, उत्तर प्रदेश में हुआ। बचपन से ही भगवान कृष्ण के प्रति उनकी अपार भक्ति व श्रद्धा थी। उनके माता–पिता, रामशाह और लीलावती, अत्यंत धार्मिक और परोपकारी स्वभाव के थे। भगवान कृष्ण के प्रति उनकी आस्था अटूट थी और वे भक्ति और सेवा में अपना जीवन व्यतीत करते थे। बचपन से ही कर्मा, भगवान कृष्ण की अनन्य भक्ति थीं और अपार श्रद्धा से पूजा–अर्चना में जीवन व्यतीत करती थीं।

भक्ति और सेवा से परिपूर्ण माता कर्मा के जीवन में उनके पति चतुर्भुज शाह के निधन के बाद दुखों का पहाड़ टूट पड़ा। यह उनके लिए अत्यंत दुख भरा समय था। इसके कुछ समय बाद माता कर्मा ने संकल्प लिया कि वे पुत्र की भली भांति देखभाल करेंगी। तत्पश्चात् उन्होंने अपने ज्येष्ठ पुत्र का विवाह कर उसे परिवार और व्यवसाय की जिम्मेदारी सौंप दी और स्वयं भगवान कृष्ण का आशीर्वाद पाने हेतु तीर्थ यात्रा पर निकल पड़ीं।

यात्रा के दौरान माता कर्मा छत्तीसगढ़ में नगरी और सिहावा भी गईं। वहां उन्होंने संतों से आशीर्वाद प्राप्त किया और राजिम के रास्ते आगे जगन्नाथपुरी की ओर चल पड़ीं।

राजिम में उनकी भेंट, सारथी समाज के एक सदस्य से हुई। इस समाज के लोगों ने उनके प्रति अत्यंत सम्मान एवं श्रद्धाभाव दिखाते हुए उन्हें सप्रेम अपने घर आमंत्रित किया। माता कर्मा ने उनके गांव में एक चबूतरे पर बैठकर भक्ति का संदेश दिया। तत्पश्चात् वे नदी के रास्ते नाव से पुरी की ओर रवाना हो गईं।

माता कर्मा के पुरी पहुंचने पर मंदिर के सेवकों ने उनसे अनुरोध किया कि वे अपने हाथ से खिचड़ी (एक पारंपरिक व्यंजन) पकाएं। भगवान कृष्ण ने इस खिचड़ी को स्वीकार कर लिया। इसी घटना के बाद से भगवान कृष्ण को खिचड़ी अर्पण करने की परंपरा आरंभ हुई।

माता कर्मा ने भगवान जगन्नाथ की भक्ति में चार वर्ष व्यतीत किए। 27 मार्च, 1064 (विक्रम संवत 1121) को माता कर्मा को भगवान कृष्ण का साक्षात्कार दर्शन हुआ और वे अपना नश्वर शरीर त्यागकर ईश्वर में विलीन हो गईं।

माता कर्मा का जीवन भक्ति, साहस और समाज सेवा का अद्वितीय उदाहरण है। उन्होंने स्वयं को भगवान कृष्ण के प्रति समर्पित कर दिया और साथ ही समाज सुधार के उद्देश्यों के प्रति भी प्रयासरत रही। माता कर्मा, नारी शक्ति का भी एक अनुपम उदाहरण थीं। उन्होंने अपने जीवन के माध्यम से यह दर्शाया कि महिलाएं समाज को सही मार्गदर्शन प्रदान करने में सक्षम हैं।

माता कर्मा ने सामाजिक बुराइयों से लड़ने के अपने प्रयासों के माध्यम से एकता, दया और करुणा भाव जैसे मूल्यों को बढ़ावा दिया। उनका जीवन इस बात का प्रमाण है कि ईश्वर को अपनाने से न केवल अपने जीवन में, बल्कि समाज में भी सकारात्मक परिवर्तन लाया जा सकता है। एक संत, समाज सुधारक और भगवान कृष्ण की परम भक्त के रूप में उन्हें आज भी अत्यंत श्रद्धा भाव से स्मरण किया जाता है।

डाक विभाग माता कर्मा पर स्मारक डाक टिकट जारी करते हुए प्रसन्नता का अनुभव करता है।

आभार :

डाक–टिकट/प्रथम दिवस आवरण/विवरणिका/विरूपण कैशे : सुश्री हिमानी

पाठ : प्रस्तावक से प्राप्त सामग्री के आधार पर

तकनीकी आंकड़े

TECHNICAL DATA

मूल्यवर्ग	:	500 पैसे
Denomination	:	500p
मुद्रितडाक–टिकटें	:	305300
Stamps Printed	:	305300
मुद्रण प्रक्रिया	:	वेट ऑफसेट
Printing Process	:	Wet Offset
मुद्रक	:	प्रतिभूति मुद्रणालय, हैदराबाद
Printer	:	Security Printing Press, Hyderabad

The philatelic items are available for sale at Philately Bureaus across India and online at http://www.epostoffice.gov.in/PHILATELY_3D.html

©डाक विभाग, भारत सरकार। डाक टिकट, प्रथम दिवस आवरण तथा सूचना विवरणिका के संबंध में सर्वाधिकार विभाग के पास है।

©Department of Posts, Government of India. All rights with respect to the Stamp, First Day Cover and Information Brochure rest with the Department.

मूल्य ₹ 15.00